जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गांव-गांव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गांव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महंगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुंचाना चाहती है, ताकि गांव-गांव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गांव के लोग आगे आएं, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ईश्वर की कहानियाँ

विष्णु नागर



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ईश्वर की कहानियाँ : विष्णु नागर
Eshwar ki kahanian : Vishnu Nagar

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

पुस्तकमाला संपादकः असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादकः संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकनः पंकज झा
लेजर ग्राफिक्सः अभय कुमार झा

पुनर्मुदण : 2010

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मु य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलŽध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samiti****,*
Basement of Y.W.A. Hostel No. 2, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,
Email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

ईश्वर की कहानियाँ



विष्णु नागर

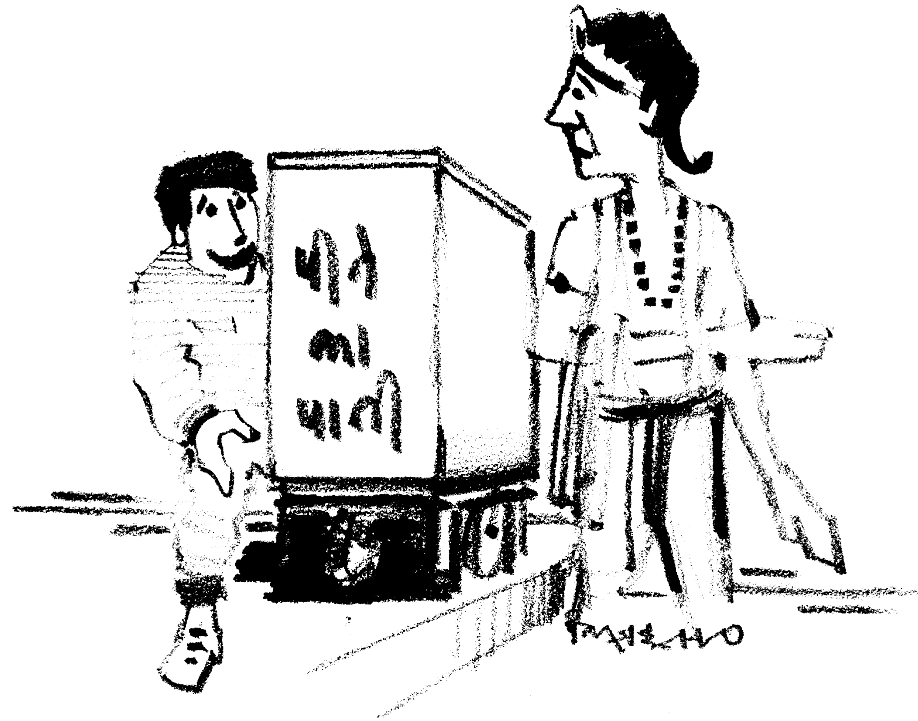
ईश्वर की कहानियाँ

ईश्वर आज ही उस शहर में आए थे। शाम का समय था। घूमने निकले थे। रास्ता भटक गए और उस धर्मशाला में नहीं पहुँच पाए, जहाँ वह ठहरे थे। ईश्वर होकर उन्हें रास्ता पूछना ठीक नहीं लग रहा था।

वह भटकते-भटकते एक चौराहे पर पहुँचे, जहाँ एक सभा में एक वक्ता कह रहा था, ''ईश्वर के बताए रास्ते पर चलो....''

ईश्वर चीखे, ''कभी मत चलो। वह दूसरों को रास्ता बताता है और खुद धर्मशाला तक का रास्ता भूल जाता है।''

इस तरह का हादसा उनके साथ एक बार दिल्ली में भी हुआ। गर्मी के दिन थे। प्यास लग आयी थी। आस-पास प्याऊ थी नहीं। ठंडे पानी की गाड़ी वाले के पास पहुँचे तो उसने गिलास भरने से पहले पूछा, ''बाबूजी दस पैसे खुले हैं ?''



''नहीं, एक रुपये का सिक्का है।''

''खुले ले आओ, बाबूजी'' - पानी वाले का जवाब था।

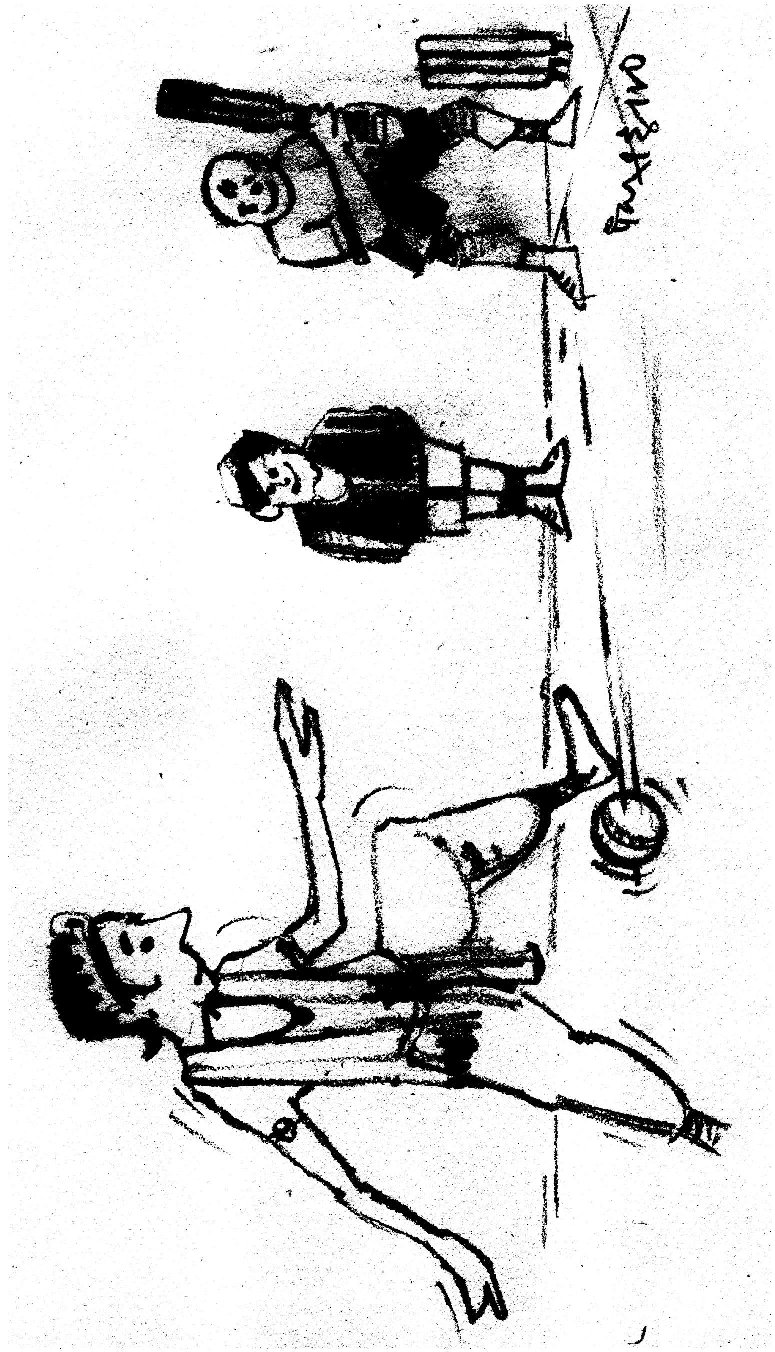
वह प्यासे घूम रहे थे कि इतने में उन्हें एक बूढ़ा दिखायी पड़ा, जो एक नौजवान को समझा रहा था:

''ईश्वर के पास किसी चीज की कमी नहीं है....''

ईश्वर ने पास जाकर कहा, ''लेकिन दस पैसे की कमी है।''

❐❐

एक दिन एक शहर में ईश्वर ने सुना कि एक औरत बहुत अच्छे रसगुल्ले बनाती है और आज उसने बनाए हैं। ईश्वर उस स्त्री के पति के मित्र का रूप धरकर उसके घर गए। पति उस समय नहीं था। औरत और ईश्वर ने दीन-दुनिया की खूब बातें कीं।



बाद में वह औरत रसोईघर में गयी और चाय बना ले आयी। अब तो ईश्वर को बेशर्म होकर कहना पड़ा, ''भाभी जी, बहुत दिनों से आपने रसगुल्ले नहीं खिलाए।''

''हाँ, □या बताएँ भैया, सब कुछ महँगा हो गया है। अब बनाने की हि मत नहीं पड़ती।''

ईश्वर समझ गए कि सीधी उँगली से घी निकलने वाला नहीं है। वे सूक्ष्म रूप में आ गए और औरत को झूठ की सजा देने के लिए सारे के सारे रसगुल्ले खा गए, जो उन्हें अच्छे भी बहुत लगे।

अगले दिन उस लड़की की जमकर पिटाई हुई जो बर्तन-कपड़े साफ़ करती थी।

❑❑

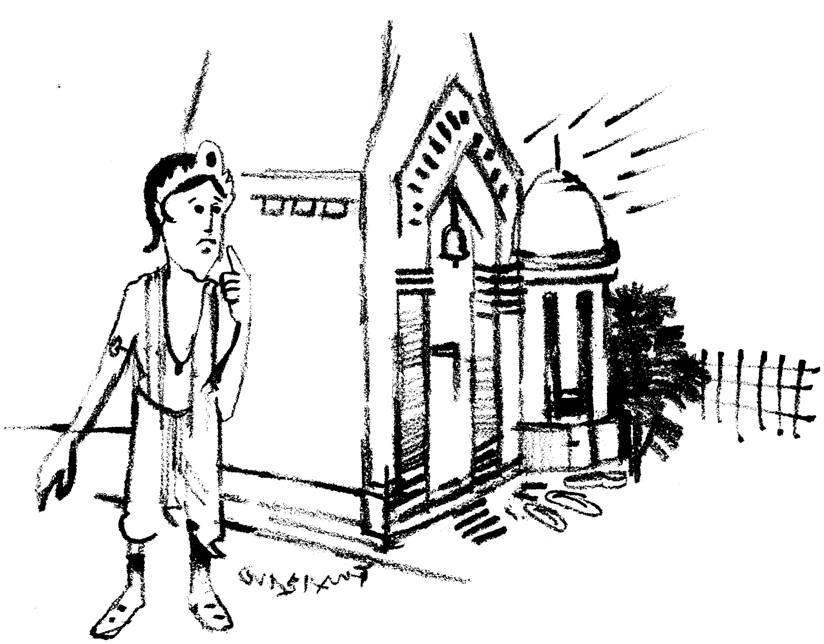
ईश्वर ने जब से मंटो की कहानियाँ पढ़ी थीं, तब से उन्हें किताबें पढ़ने का शौक हो गया था। वह एक 'पुस्तक मंदिर' में गए और उन्होंने सौ रुपये की किताबें ख़रीदने के लिए चुन लीं।

उन्होंने बिल बनवाने के लिए किताबें काउन्टर पर रखीं। बिल एक सौ बीस रुपये का था। ईश्वर चौंके। उन्होंने पूछा, ''भई, कमीशन देने की बजाय ये बीस रुपये किस बात के बढ़ा दिए?'' उन्हें उ□ार मिला, ''सेल्स टै□स के।''

ईश्वर ने उतावली में पूछा, ''भई, ये किताबों पर सेल्स टै□स कब से लगने लगा?''

''जब से किताबों का शुमार सजावट के सामान में होने लगा है।'' दुकानदार का उ□ार था।

❑❑



बात उस ज़माने की है जब पंजाब में उग्रवाद का बोल–बाला था और अच्छे–अच्छे तीसमार खाँ हिन्दू अमृतसर–गुरुदासपुर जाने से घबराते थे।

लेकिन ईश्वर तो ईश्वर थे, उन्हें किस बात का डर!

वे अमृतसर–गुरुदासपुर–जालंधर सब घूम आए। उनका तो बाल वैसे भी बाँका नहीं होना था और किसी ने उनका बाल बाँका करने की कोशिश भी नहीं की।

जब वे दिल्ली लौटे तो इतने खुश थे कि अगर वे ईश्वर न होते, हिन्दू होते तो हनुमान जी को सवा पाँच रुपये का प्रसाद ज़रूर चढ़ा आते।

लेकिन वे ईश्वर थे और अपने ही हाथों मजबूर थे।

❐❐

एक दिन शाम को ईश्वर टहल रहे थे। उन्हें छह–सात साल की उम्र के कुछ बच्चे क्रिकेट खेलते मिले। वह खड़े हो गए और खेल देखने लगे।

थोड़ी देर में बॉल ग़लती से उन्हीं की ओर आती दिखायी दी। वह फुर्ती से उस जगह से हटे। फिर भी वह बॉल उनकी बगल से गुजरती हुई निकल गयी।

एक बच्चे ने कहा, ''सॉरी, अंकल जी।''

ईश्वर को उस बच्चे का माफ़ी माँगना अच्छा लगा। उन्होंने मन–ही–मन क्रिकेट को लोकप्रिय होने का आशीर्वाद दिया।

तभी से क्रिकेट लोकप्रिय है और दूरदर्शन पर भी दिन–रात दिखाया जाता है।

❐❐

ईश्वर का उस दिन का काम पूरा हो चुका था। वह यों ही दिल बहलाने के लिए सड़क पर निकले थे। इतने में पास के एक मंदिर से संगीत का स्वर सुनायी दिया। ध्यान से सुना तो पता चला कि उन्हीं से अनुनय–विनय की जा रही थी :

''ईश्वर, मैं पापी हूँ, मेरा उद्धार कर। मुझे सुख दे। संपि□ा दे। शांति दे। मुझे रोग, बुढ़ापे और मृत्यु से बचा। मैं तेरा अज्ञानी बालक हूँ।'' आदि–आदि।

ईश्वर मंदिर में चले गए और सब लोगों में बराबरी से शामिल होने के लिए उन्होंने मूर्ति के हाथ जोड़े और भजनीकों मैं बैठ गए। उन्हें भजन का संगीत–पक्ष इतना अच्छा लगा कि वे स्वयं को भजन गाने से रोक न सके।

आरती के बाद केले और हलवे का प्रसाद ईश्वर को भी



मिला। उन्होंने बड़ी श्रद्धा से उसे ग्रहण किया।

वे बाहर आए तो उनकी चरण-पादुकाएँ गायब थीं।

❏❏

एक मित्र दूसरे से उधार माँग रहा था। कह रहा था, ''भगवान कसम, पहली तारीख़ को लौटा दूँगा।''

''भगवान की कसम खा रहा हूँ, फिर भी भरोसा नहीं? अच्छा, माँ की कसम। एक तारीख़ को तुझे पैसे जरूर वापस मिल जाएँगे।''

दूसरे मित्र ने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया।

''यार, अपनी औलाद की कसम खाकर कहता हूँ। अगर एक तारीख़ को उधार नहीं लौटाया तो उसका मरा मुँह देखूँ।''

उसे पैसे मिल गए।

यह घटना ईश्वर की आँखों के सामने घटी।

❏❏

दोपहर का वक्त। दो आदमी बात कर रहे थे, ''आदमी को बस आदमी का प्यार चाहिए......।''

ईश्वर, जो कोई ढाबा ढूँढ रहे थे, बोले, ''और अगर दोपहर का एक बजा हो तो खाना भी चाहिए...।''

❏❏

एक दिन ईश्वर मस्ती में थे। वह सब कुछ सच-सच कहने के मूड में थे।

एक ने उनसे सवाल किया, ''ईश्वर एक है। फिर उसके नाम पर इतने झगड़े □यों?''

ईश्वर का जवाब था, ''ईश्वर ने अपनी शांति के लिए ही यह प्रबन्ध कर रखा है।''

❏❏

ईश्वर से पूछा गया कि उन्हें कौन-सा मौसम अच्छा लगता है- ठंड का, गर्मी का या बरसात का।

ईश्वर ने कहा, ''मूर्ख, यह सवाल ग़रीबों से किया करते हैं, ईश्वर से नहीं।''

❏❏

ईश्वर उन भारतीयों की तरह नहीं थे, जिन्होंने अपना देश नहीं मगर विदेश घूमा होता है। उन्होंने देश खूब देखा था और अब वे विदेश-यात्रा की तैयारी में थे।

ईश्वर का अपना धरती का पता तो था नहीं और स्वर्ग का पता



देने से पासपोर्ट बन नहीं सकता था। तब पहली बार ईश्वर को पासपोर्ट के फ़ॉर्म पर नकली पता देना पड़ा और जाँच के लिए आने वाले सिपाही की मुट्ठी गरम करनी पड़ी।

पहली बार उन्हें लगा कि वे ईश्वर नहीं, आदमी होते तो अच्छा होता। झूठ और रिश्वत, शायद दोनों से बच जाते।

❑❑

एक 'सत्संग' में उपदेशक बोल रहा था, ''हम सब ईश्वर की संतान हैं.....''

सुनने वालों में ईश्वर भी थे। उन्होंने पूछा, ''और मैं किसकी संतान हूँ ?''

उपदेशक ने कहा, ''तू भी उसी ईश्वर की। तुझे □या ऊँचा सुनायी देता है ?''

❑❑

उपदेशक कह रहा था, ''ईश्वर का नाम लो। नैया पार हो जाएगी।''

इस पर एक श्रोता कह उठा, ''बरसात का मौसम है। इसमें पार नहीं होगी। अभी तीन नाव-दुर्घटनाओं में ख्भ लोग मरे हैं।''

इस पर एक साथ कई आवाजें आयीं, ''यह विधर्मी है। इसे भगाओ।''

''मैं खुद चला जाता हूँ,'' उस श्रोता ने कहा।

ईश्वर भी उसके साथ बाहर आए। उन्होंने उस व्यक्ति का नाम, काम, घर, बच्चों के बारे में पूछा। दोनों ने साथ-साथ चाय पी और हँसते-हँसते विदा हुए।

❑❑

''ईश्वर सबका मित्र है, सबका रक्षक है, सबका पालनहार है....'' संन्यासी प्रवचन कर रहे थे।

''मेरा □यों नहीं ? मैं फ वर्ष से दिन-रात मेहनत-मजदूरी करता हूँ। फिर भी भूखा का भूखा हूँ।'' उसकी आँखों में आँसू आ गए।

संन्यासी के इशारे से पहले ही, भक्त संन्यासी का इशारा समझ गए और उसे बाहर खदेड़ आए।

संन्यासी ने पून: दोहराया, ''तो जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, ईश्वर सबका मित्र है, सबका रक्षक है, सबका पालनहार है।''

❑❑

एक दिन ईश्वर एक धर्मगुरु से मिलने पहुँचे।

वहाँ पता चला कि आज धर्मगुरु का एक खास भक्त चढ़ावे



के त्त हजार रुपये नकद लेकर चंपत हो गया है। धर्मगुरु उदास हैं और उन्होंने किसी से भी मिलने से मना कर दिया है।

ईश्वर ने धर्मगुरु के एक ाक्त से कहा कि जाकर उनसे कहो कि स्वयं ईश्वर उनसे मिलने आए हैं।

इसपर भक्त का जवाब था : ''आज वे ईश्वर तो □या, ईश्वर के बाप से भी नहीं मिलेंगे।''

❐❐

ईश्वर दुनिया में अकेले रहते-रहते घबरा चुके थे। वह किसी को मित्र बनाना चाहते थे। काफ़ी सोच-विचार और अंतर्द्वंद्व के बाद उन्होंने तय किया कि वे किसी ईश्वर-भक्त को अपना मित्र नहीं बनाएँगे। €योंकि जिस क्षण उसपर यह रहस्य खुलेगा कि वह

ईश्वर हैं, वह पैर पकड़ लेगा और सुख-स पZि, रोग-शोक से मुक्ति की प्रार्थना करने लगेगा।

उन्होंने एक नास्तिक को अपना दोस्त बनाया, जिसने कभी इस बात पर विश्वास नहीं किया कि जिससे उसकी दाँत कटी दोस्ती है, वह मनुष्य नहीं, ईश्वर है।

वह बड़ा मजेदार आदमी था और ईश्वर के सामने, ईश्वर की कुछ इस तरह हँसी उड़ाता कि ईश्वर भी हो-हो कर हँसने लगते थे और खुद अपने पर शक करने लगते कि वह ईश्वर हैं या आदमी ?

❐❐

ईश्वर को धरती की कई बातें पसंद थीं, पर बात-बात पर लोगों का गाली देना नापसंद था। उन्हें इस बात का घोर आश्चर्य होता था कि लोग कैसे खुद को भी गाली दे लेते हैं। जैसे 'मुझ ......की किस्मत ही ख़राब थी, जो वहाँ गया।' 'मुझ जैसा.........और नहीं मिलेगा।'

एक दिन ईश्वर ने तमाम शहरों-गाँवों में पोस्टर लगवा दिए : ''जो गाली नहीं देगा, वह ईश्वर की शरण में जाएगा।''

लोगों ने इसका उल्टा ही अर्थ लिया। जो गाली नहीं देते थे, वे भी देने लगे।

❐❐

ईश्वर ने धरती पर आते समय सोचा था कि यहाँ ज्यादा खर्च नहीं होगा। मगर जो साथ लाए थे, सब खर्च हो गया।

ईश्वर चाहते तो चुटकियों में पैसा पैदा कर लेते, मगर उन्होंने



मेहनत–मजदूरी करके कमाई करने की सोची। यह काम उन्हें मिला, लेकिन बड़ी मुश्किल से।

गर्मी के दिन थे। सब मजदूरों को पसीना आ रहा था, मगर ईश्वर को नहीं। इस पर एक मजदूर का ध्यान गया। उसने दूसरे से कहा। दूसरे ने तीसरे को बताया। इस तरह सब मजदूरों में बात फ़ैल गयी।

वे समझ गए कि हो न हो, ये मजदूर के भेस में ईश्वर हैं। उन्होंने गाना सुन रखा था : ''या जाने किस भेस में बाबा, मिल जाएँ भगवान रे।''

सब मजदूर उनके चरणों में आ–आकर गिरने लगे। भाव–विह्वल होने लगे। रोने लगे। गाने लगे। उनसे मनौतियाँ माँगने लगे।

परेशान ईश्वर का पसीना छूट गया।

❒❒

धरती पर आने के बाद एक दिन ईश्वर ने ब्राह्मण का वेष धारण किया। ईश्वर को हमेशा से ब्राह्मण प्रिय थे। वह खुद तो उनकी पूजा करते ही थे, दूसरों से भी करवाते थे।

ईश्वर कुछ दूर ही चले थे कि उन्हें एक यजमान मिला। वह भोजन कराने उन्हें घर ले आया। उसने ईश्वर के चरण धोए। चरणामृत लिया। फिर उस स्थान को पवित्र किया, जहाँ ब्राह्मण देवता को भोजन कराना था।

आसन और चौकी रख दी गयी। पानी भरा लोटा और गिलास रख दिए गए। रसोईघर में गृहिणी थाली में तरह–तरह के व्यंजन परोसने लगी।

इतने में पुलकित मेजबान ने ईश्वर से पूछ लिया, ''महाराज, आप कौन–से ब्राह्मण हैं ?''

ईश्वर को इतना ही मालूम था कि धरती पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होते हैं। ब्राह्मण भी तरह–तरह के होते हैं, यह उन्हें मालूम नहीं था।

ईश्वर ने चौंककर पूछा, ''मैं आपके प्रश्न को समझा नहीं ?''

यजमान बोला, ''ब्राह्मण देवता, क्रोध न कीजिए। वैसे ही जिज्ञासावश पूछ लिया कि आप कौन से ब्राह्मण हैं।''

ईश्वर को काटो तो खून नहीं। या जवाब दें !

यजमान ने ईश्वर को सोच में पड़ते देखा तो उसने समझा कि यह आदमी मूर्ख बना रहा है। यह ब्राह्मण नहीं है। यह ब्राह्मण के वेश में शूद्र है। उसके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा।

किसी तरह ईश्वर भूखे-प्यासे वहाँ से जान छुड़ाकर भागे।

❐❐

ईश्वर एक दिन सुनसान रास्ते से जा रहे थे। अचानक दो युवक प्रकट हुए। उन्होंने चाकू सामने कर दिया और कहा, ''जो हो, सो सामने रख दे।''

ईश्वर इतने सकपका गए कि उन्हें अन्तर्ध्यान होने तक का ख़याल नहीं आया। उन्होंने सोचा, अब साधारण आदमी की तरह सच्चाई से काम लेना चाहिए।

उन्होंने कहा, ''मैं ईश्वर हूँ भैया। मेरे पास रुपया पैसा कहाँ?''

एक युवक ने कहा, ''बकवास मत कर। जो है सो निकाल।''

ईश्वर ने कहा, ''वाकई, सच कह रहा हूँ, कुछ नहीं है।''

एक युवक ने उनका कॉलर पकड़ा और दूसरा उनकी तलाशी लेने लगा। वास्तव में कुछ नहीं निकला। घड़ी भी नहीं।

एक युवक ने कहा : ''जा भाग जा। दुबारा इस रास्ते पर मुँह मत दिखाना।''

ईश्वर ने मिनमिनाते हुए कहा, ''मैंने कहा नहीं था, मैं ईश्वर हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है। पर सुनते नहीं।''

❐❐

लहलहाती फ़सल को देखकर ईश्वर किसान से बोले, ''बहुत पुण्यवान हो।''



''पुण्यवान और मैं? पुण्यवान तो वह सेठ है जिसका मैं कर्ज़दार हूँ। उसी के घर यह सारी फ़सल चली जाएगी।''

❐❐

ईश्वर एक गाँव में पहुँचे। वहाँ एक किसान से मिले। उससे उसके दुख-दर्द पूछने लगे। उसने कुछ बताए, कुछ नहीं बताए।

शाम, रात में बदलने वाली थी। उसके यहाँ भोजन बन चुका था। अचानक किसान ने कहा, ''आइए, भोजन कीजिए। पत्नी ने थाली तैयार कर दी है।''

मेथी की भाजी और गेहूँ की रोटी की सुगंध भूख बढ़ाने वाली थी। ईश्वर ने संकोच के कारण भूख न होने का बहाना किया। लेकिन किसान का आग्रह ऐसा था कि ईश्वर पिघल गये।

मगर पिघलते-पिघलते उन्हें ख़याल आ गया कि उन्हें स्वर्ग में किसान-मजदूरों के घर खाना न खाने की खास हिदायत दी गयी थी। उनसे कहा गया कि अगर उन्होंने किसान-मजदूर के घर

खाना खाया तो उनमें दुनिया बदलने की भावना जागेगी। यह काम ल बा है और ईश्वर का नहीं है। इसलिए वे इस चक्कर में न पड़ें।

ईश्वर ने फिर खाने से इनकार किया तो किसान ने कहा, ''अन्न का कभी अपमान नहीं किया करते। अन्न का अपमान, ईश्वर का अपमान होता है।''

ईश्वर ने अपना अपमान होने दिया मगर खाना ज़मींदार के यहाँ ही खाया।

❒❒

ईश्वर को यह जानकर सदमा पहुँचा कि कुछ लोग उन्हें मानते नहीं हैं। कुछ लोग उन्हें मानते हैं पर उनकी मूर्ति की पूजा नहीं करते। कुछ उन्हें खुदा कहते हैं, तो कुछ प्रभु यीशु।

दरअसल हुआ यह कि उन्होंने एक रात तीन कोढ़ियों को स्पर्श किया और तीनों सुबह चंगे हो गए। वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे।

उनमें से एक मंदिर की तरफ़ दौड़ा, एक मस्जिद की तरफ़ लपका और एक गिरजाघर की तरफ़ भागा।

तब से ईश्वर सावधान हो गए। जब भी वे किसी का भला करना चाहते, उससे उसका धर्म जरूर पूछ लेते।

❒❒

एक दिन ईश्वर एक मज़दूर के यहाँ अचानक पहुँचे। उन्हें अतिथि जानकर उसने उनकी ख़ूब आवभगत की।

ईश्वर उसपर बहुत मेहरबान हुए। वे चुपचाप दरी के नीचे सोने के कुछ सिक्के छोड़ आए।



बाद में मज़दूर की पत्नी ने दरी समेटी तो सिक्के निकले। उसने अपने पति को बताया। मज़दूर ईश्वर को ढूँढ़ने निकला। जहाँ–जहाँ उनके होने की संभावना हो सकती थी, वहाँ–वहाँ गया। वह □या जानता था कि ये ईश्वर थे।

थक–हारकर वह सोने के सिक्के थाने में जमा कर आया और बदले में पुलिस की मार खा आया।

ईश्वर को जब मज़दूर की मूर्खता का पता चला तो वह मन–ही–मन खूब क्रोधित हुए।

उन्होंने अगले ही दिन नौकरी से उसकी छँटनी का नोटिस भिजवा दिया।

❒❒

एक दूकान के बाहर बोर्ड टँगा था : ''टी. वी. खरीदिए और घर बैठे अमीर बनिए।''

ईश्वर को यह विज्ञापन मज़ेदार लगा। उन्होंने सोचा कि मुझे अपने भक्तों के लिए पता करना चाहिए कि आख़िर मामला □या है ?

अंदर जाकर देखा तो वहाँ बहुत लंबी '□यू' थी और धक्का-मुक्की हो रही थी। ईश्वर ने एक नज़र देखा तो सभी उनके भक्त थे।

अपने से ज़्यादा समझदार भक्तों को देखकर ईश्वर बहुत खुश हुए और वापस मुड़ गए।

❑❑

पृथ्वी पर धर्म के नाम पर इतने दंगे हो रहे थे कि ईश्वर को लगा कि यहाँ आदमी को आदमी कम, ईश्वर अधिक प्यारा है। वह इससे मन-ही-मन खुश हुए।

ईश्वर ने अपनी यह राय एक आदमी को बतायी। पहले तो वह ईश्वर के भोलेपन पर जी खोलकर हँसा। फिर खूब रोया।

वह हँसा, यह सबने देखा। वह रोया, यह उसने किसी को भी नहीं बताया। ईश्वर को भी नहीं।

❑❑

ईश्वर वापस स्वर्ग पहुँचे तो अपने नास्तिक दोस्त और इस दुनिया की कृपा से इतने बदल चुके थे कि उनकी इच्छा होने लगी थी कि सबको खाना, कपड़ा, घर और न्याय मिले। सब बराबर हों।

देवता उनके विचारों से बड़े चिन्तित हुए। उन्हें डर लगा कि कहीं धरती की यह छूत स्वर्ग में न लग जाए। उन्होंने ईश्वर को यह बताया कि यह कर्मफल के सिद्धान्त के विपरीत है और बराबरी की बातों में विश्वास रखने वाले वे ही लोग हैं, जो ईश्वर को नहीं मानते।

लेकिन ईश्वर के मन में द्वन्द्व चलता रहा, जिसे उन्होंने किसी को नहीं बताया। एक दिन वे स्वर्ग से लापता हो गए और ढूँढ़े नहीं मिले।

यह ईश्वर ही जानता है कि अगर वे हैं तो कहाँ हैं!

❑❑❑❑